



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः  
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय  
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय  
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)  
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 13 बुलेटिन अवधि: 15-19 फरवरी 2017 दिन: मंगलवार दिनांक: 14 फरवरी, 2017

**मौसम पूर्वानुमान:**

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	15-02-2017	16-02-2017	17-02-2017	18-02-2017	19-02-2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	27	27	26	26
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	06	06	07	07	08
बादल आच्छादन	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल	बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	45	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	010	010	010	008
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (07 से 13 फरवरी 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में बादल छाये रहे तथा वर्षा नहीं हुई, अधिकतम तापमान 22.4 से 24.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.0 से 9.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 91 से 95 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 38 से 52 प्रतिशत एवं हवा 2.0 से 8.5 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम व उत्तर दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

**कृषि मौसम परामर्श**

**फसल प्रबन्ध:**

❖ बसंतकालीन गन्ना की बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक पूरा कर लेना चाहिए।

- ❖ गन्ना बीज हेतु गन्ना के उपरी दो तिहाई भाग का प्रयोग करेंगे। प्रति हैक्टर 3 आँखें वाले 40–50 हजार टुकड़े प्रयोग करें। लाईन पूरब–पश्चिम दिशा में 75 सेमी की दूरी पर बनाए।
- ❖ गन्ना के बीज का शोधन 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी के घोल में 10–15 मिनट बीज को डुबाए। उर्वरक 120:60:40 एनपीके/है० प्रयोग करें।
- ❖ सूरजमुखी की मार्डन, सूर्या, आदि की बुवाई फरवरी के दूसरी पखवाड़े में करें।
- ❖ जायद में मक्का हेतु संकुल प्रजातिया, नवीन, श्वेता, नवजोत, कंचन, सूर्या, गौरव, मीठी मक्का– माधुरी तथा संकर मक्का की गंगा–11 (हरा भुट्टा हेतु) की बुवाई फरवरी के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ में पीली गेरुई के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं। खेत में पत्तियों को छूने से पीला रंग हाथ में लगे तो रोग के लक्षण दिखाई देते ही प्रोपीकोनाजोल 25 ई० जो टिल्ट यादि के व्यवसायिक नाम से बाजार में उपलब्ध है के 500 मि०ली० हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ मेंथा की बुवाई 15–20 फरवरी तक कर सकते हैं। उन्नतशील किस्मों– कोशी, सक्षम, कुशल, हिमालय, सरयू एवं संगंध पौध संस्थान के पन्तनगर प्रक्षेत्र से प्राप्त कर सकते हैं। 400–500 कि०ग्रा० जड़/हैक्टर की आवश्यकता होती है। बुवाई से पूर्व जड़ों को 5–7 सेमी लम्बे टुकड़ों जिसमें 3–4 गांटे हो में काटते हैं। इसके उपरान्त 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में घोल कर इसमें 5 मिनट तक डुबोकर शोधित करते हैं। इसके बाद जड़ टुकड़ों को घोल से निकाल कर आधे घण्टे तक छायादार स्थान में सुखा कर बुवाई करते हैं।
- ❖ मटर में रतवा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू०पी० का 2.5 ग्राम/ली० या प्रोपीकोनाजोल 1 मि०ली०/ली० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ चना में फलीबेधक के नियंत्रण के लिए क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस०सी०, 125 मि०ली०/है० या इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस०जी०, 220ग्राम/है० या नोवालयूरान 10 ई०सी०, 750 मि०ली०/है० या लैम्डासाइहैलोथिन 5 ई०सी०, 500मि०ली०/है० 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ में यदि माहू का प्रकोप हो तो थायोमेथाक्जाम 25 डब्लू०एस०जी० 50ग्राम/है० या क्यूनॉलफास 25 ई०सी० एक लीटर/है० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ की फसल में पीला रतवा रोग का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई० सी० का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

#### उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ खर्चा रोग संक्रमण अगर दिखाई पड़े तो निदान हेतु 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक (2ग्राम/लीटर) का प्रथम छिड़काव करें।
- ❖ आम फल पेड़ों में भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु ऐमिडाक्लोरपिड 17.8 एस०एल० का 0.03 मि०ली०/लीटर की दर से प्रथम छिड़काव पुष्पगुच्छ की शुरुआत में करें। फल की मटर अवस्था पर थियामैथोक्जैम से दूसरा छिड़काव 0.32 ग्राम/लीटर और तीसरा छिड़काव केवल आवश्यकता पड़ने पर दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद एन०एस०के०ई० 5 प्रतिशत का 5 मि०ली०/लीटर की दर से करें।
- ❖ लहसुन में यदि ऊपर से पत्तियाँ पीली पड़ रही हो तो नियंत्रण हेतु डिफिनोकोनाजोल का 1 मि०ली०/लीटर के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मटर में रतवा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू०पी० का 2.5 ग्राम/ली० या प्रोपीकोनाजोल 1 मि०ली०/ली० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस०सी०, 150मि०ली०/है० के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस०सी०, 500मि०ली०/है० की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्त्रानिलिप्रोले 10.26 ओ०डी०, 900 मि०ली०/है० या थियामैथोक्जाम 25 डब्लू०एस०जी०, 200 ग्राम/है० की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस०जी० 200ग्रा०/है०, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि०ली०/है०, लैम्डा साइहैलोथिन 5 सी०एस० 300मि०ली०/है० की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करें।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथिन 5 इसी 300मि०ली०/है० या फिप्रोनिल 5 एस०सी० 1लीटर/है० की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।

- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- ❖ प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव के 20 दिन बाद फल का उपयोग करें।

### पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें। सरद ऋतु में बिछावन की मोटाई बढ़ा दे जिससे कुक्कुट को पर्याप्त गर्मी मिलती रहे।
- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा० आर० के० सिंह  
 प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी  
 ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,  
 गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर